रेज्ड बेड और शुन्य जुताई से गेहूं की खेती बदलते मौसम की आवश्यकता:निकरा ग्राम मुमताजपुरमें प्रक्षेत्र-भ्रमण तथा कृषक संगोष्ठी

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली द्वारा जलवायु समुत्थानशील कृषि हेतु राष्ट्रीय नवोन्मेष परियोजना के अंतर्गत अपने दत्तक गाँव मुमताजपुर, पटौदी में रेज्ड-बेड व शुन्य-जुताई विधि से गेहूं के प्रदर्शन का अवलोकन हेतु प्रक्षेत्र-भ्रमण तथा कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया | पूसा संस्थान के निदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र जी ने लगभग २५० कृषकों का परियोजना द्वारा प्रदर्शित इन विधियों के अवग्रहण के लिये बधाई दी तथा आह्वान किया कि मौसम के बदलते परिवेश में अनुकूलन हेतु कृषकों को कम सिंचाई तथा कम रासायनिक खाद व दवाओं के प्रयोग वाले पद्धतियों को अपनाना होगा | उन्होंने जानकारी दी कि रेज्ड-बेड पद्धति से जहाँ कम सिंचाई की आवश्यकता व कम खरपतवार का संक्रमण हो पाता है वहीँ बीज अंकुरण अधिक हो जाता है तथा तेज हवा व अतिवृष्टि में पौधों का नुकसान कम होता है|

संस्थान के प्रयास सेनिकरा ग्राम मुमताजपुर व मुमताजपुर से लगे अन्य गांवों में लगभग ३० एकड़ में रेज्ड-बेड तथा लगभग ६०० एकड़ में जीरो-टिलेज विधि से गेहूं की खेती अपनाई गयी है | पूसा चेतना कृषक क्लब के अध्यक्ष श्री तुलसीराम जी ने जानकारी दी की पूसा संस्थान के परियोजना द्वारा कस्टम हायर सेवा केंद्र स्थापित किया गया है जहाँ से कृषक, कृषि यंत्र किराए पर प्राप्त कर पा रहे हैं जिसके कारण इस विधि का फैलाव तेजी से हो पा रहा है |

पूसा संस्थान के संयुक्त प्रसार निदेशक डॉ. जे.पी. शर्मा जी ने कृषकों का बाजार से जुड़ाव पर नवीन विधाओं के प्रयास पर बल दिया | उन्होंने कहा कि फसल उत्पादन के साथ-साथ कृषकों को फसल की कटाई के उपरांत प्रौद्दोगिकियों को अपनाना चाहिए ताकि मूल्य संवर्धन से अधिक आमदनी प्राप्त हो सके | परियोजना के समन्वयक डॉ. हिमांशु पाठक जी ने कृषकों को हरित गैस उत्सर्जन के बारे में जानकारी दी तथा सचेत किया कि फसल अवशेष को न जलाएं तथा रासायनिक दवा व खाद का अंधाधुध प्रयोग न करें

जलवायु स्मार्ट ग्राम के समन्वयक डॉ. रविन्द्र पडारिया जी ने बताया कि संस्थान द्वारा परियोजना के दत्तक ग्राम मुमताजपुर में कृषि-सुचना को अधिक प्रभावी बनाने हेतु एक सुचना कियोस्क का प्रबंध किया गया जिसका विमोचन संस्थान के निदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र जी ने किया |

डॉ. आर.एन. शर्मा ने पशुपालन के उन्नत विधियों के बारे में जानकारी दी | इस कार्यक्रम में पूसा संस्थान के १२ वैज्ञानिकगण डॉ. संजय बंद्योपाध्याय, डॉ. मनोज खन्ना, डॉ. सुभाष चंद्रा, डॉ. तपन दास, डॉ. तपन प्रोकाष्ठा, डॉ. परिमल सिन्हा, डॉ. डी.के. सिंह, डॉ. मदनपाल, डॉ. विनय सहगल, डॉ. निवेता जैन, डॉ. आरती भाटिया व डॉ. रमेश यादव तथा कृषि विज्ञान केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ और ब्लॉक कृषि अधिकारी श्री तेज सिंह व कृषि विकास अधिकारी श्री यादव जी के साथ- साथ २५० कृषकों व महिलओं ने भाग लिया | परियोजना में कार्यरत वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता श्री अभय कुमार सिंह, प्रदीप कुमार यादव, सोहनवीर सिंह तथा नीलमणि राठी ने प्रक्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया |